

न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर (द्वितीय) अलवर (राजस्थान)

अपील संख्या रजि०न० प्रवेश तिथि निर्णय दिनांक  
11/13/2025 2025/122 28.03.2025 22.07.2025

1. श्रीमति पत्ता पुत्री मोतीराम पत्नी शिवचरण चमार निवासी बडौदामेव ग्राम खोरपुरी तहसील लक्ष्मणगढ हाल निवासी सरपुर बिरसंगपुर तहसील किशनगढ बास जिला अलवर।

—अपीलान्ट

बनाम

1. सावित्री उर्फ जावत्री पत्नी रघवीर निवासी 58, गंगवानी पींगवान नूँह हरियाणा।

—रेस्पोडेन्ट



अपील विरुद्ध इतंकाल संख्या 1239 दिनांक 03.01.2025 न्यायालय उप तहसीलदार बडौदामेव तहसील लक्ष्मणगढ।

उपस्थिति:-

- 01.श्री दशरथ सिंह  
02.श्री अनिल गुप्ता

—वकील अपीलाण्ट  
—वकील रेस्पोडेन्ट

—:: निर्णय ::—

अपीलाण्ट की ओर से यह अपील नायब तहसीलदार बडौदामेव के निर्णय दिनांक 03.01.2025 से व्यथित होकर प्रस्तुत की है जिसके संक्षेप में सुसंगत तथ्य इस प्रकार है कि तहत अदालत ने अपने निर्णय दिनांक 03.01.2025 के बाबत विरासत इतंकाल सम्मी पत्नी मोतीराम मृतक का मिन अपीलाण्ट व रेस्पो० सावित्री के नाम आराजी ख.न. 30 रकबा 0.7588 खसरा नम्बर 29 रकबा 0.7335 वाके ग्राम खोरपुरी दर्ज व स्वीकार किया है जो गलत है। तहत अदालत ने सही प्रकार से सम्मी पत्नी मोतीराम मृतक के वारिसान के बाबत कोई जाँच नहीं की और ना ही अपीलाण्टा को सुनवाई का अवसर दिया गया। अपीलाण्टा का पिता मोतीलाल आराजी ख.न. 30 व 29 का 1/2 भाग का खातेदार काश्तकार था जिसकी मृत्यु दिनांक 12.06.2024 को हो गई थी। अपीलाण्टा के पिता मोतीलाल की मृत्यु के पश्चात् मिन अपीलाण्ट व उसकी माता सम्मी ने इतंकाल विरासत खुलवाने के लिए प्रार्थना पत्र पेश किया तथा उस प्रार्थना पत्र के साथ मिन अपीलाण्टा की माता सम्मी देवी का शपथ पत्र वारिस प्रमाण पत्र ग्राम पंचायत के द्वारा जारी पेश किया गया जिसके आधार पर मोतीलाल के विधिक वारिसान मिन अपीलाण्टा व उसकी माता सम्मी ही थी इसके अलावा उसका कोई विधिक वारिसान उस समय जीवित नहीं था अब सम्मी बेवा मोतीलाल की मृत्यु हो चुकी है और उसी आधार पर मृतक सम्मी देवी का इतंकाल विरासत खोलना चाहिए था लेकिन तहत अदालत ने अपने अधिकार क्षेत्र के बाहर जाकर रेस्पो० के नाम विरासत इतंकाल खोला गया जो कानूनी रूप से अपास्त किये जाने योग्य है। रेस्पो० का मृतक सम्मी की चल-अचल सम्पति से कोई सरोकार व वास्ता नहीं है इसलिए उक्त विरासत इतंकाल खिलाफ कानून दर्ज होकर निर्णित हुआ है जो निरस्त किया जावे।

अपीलाण्ट अपील मीमो के साथ दफां 5 मियाद अधिनियम का प्रार्थना पत्र भी पेश कर उक्त इतंकाल की सर्वप्रथम जानकारी 03.03.2025 को होने का कथन करते हुये जानकारी की दिनांक से अपील को मियाद में शुमार किये जाने का निवेदन किया गया।

अतिरिक्त जिला कलेक्टर  
(द्वितीय) अलवर (राज०)

अपील अपीलाण्ट दर्ज रजिस्टर की जाकर रेषपो० को जर्गे नोटिस तलब किया गया। अधीनस्थ न्यायालय का रिकॉर्ड तलब किया गया।

हमने उभयपक्ष के योग्य अधिवक्तागणों की बहस सुनी। विद्वान अधिवक्ता अपीलाण्ट ने अपील भीमों में अंकित तथ्यों को दोहराते हुये तर्क दिया कि तहत अदालत ने मृतक मोतीलाल के वैध वारिसान की जाँच नहीं की जबकि रेषपो० का मोतीलाल की आराजी से कोई ताल्लुक नहीं है। मोतीलाल के उसकी पत्नी सम्मी व एक पुत्र रोशन व पुत्री बसन्ती व पत्ता थी। जिनमें से बसन्ती अविवाहित नालौलाद फौत हो गई तथा रोशन पुत्र अपने पिता मोतीलाल के जीवन में ही फौत हो गया इसलिए प्रकार मोतीलाल के वैधानिक वारिसान सम्मी व उसकी पुत्री पत्ता दो ही रहे हैं। रोशन की पत्नी सावित्री द्वारा हरियाणा में दूसरा विवाह कर लिया जो हरियाणा रहती है। इस प्रकार तहत अदालत द्वारा मोतीलाल के विधिक वारिसान की समुचित जाँच नहीं की गई और ना ही इस संबंध में अपने निर्णय में कोई टिप्पणी अंकित की है। उनका यह भी तर्क रहा है कि उक्त विवादित इतंकाल की सर्वप्रथम जानकारी अपीलाण्ट को दिनांक 03.03.2025 को पटवारी हल्का के पास राजस्व अभिलेख की ऋण पत्रावली तैयार कराने जाने पर हुई इसलिए अपील को मियाद में शुमार करते हुये अपील अपीलाण्ट स्वीकार फरमाई जाकर उक्त विवादित इतंकाल को निरस्त फरमाया जावे। वकील अपीलाण्ट ने अपने तर्कों के समर्थन में RRD 2007 page 736, RRT 2024(2) page 1090 न्यायिक दृष्टांत प्रस्तुत किए।

विद्वान अधिवक्ता रेषपो० का तर्क है कि उक्त अपील अपीलाण्ट द्वारा 09 वर्ष के विलम्ब से पेश की गई है जो मियाद बाहर है। विवादित इतंकाल मोतीलाल के विरासत का दर्ज किया गया है। चूंकि सावित्री रेषपो० मोतीलाल की पुत्रवधु अर्थात रोशन की पत्नि है इसलिए मोतीलाल की वैधानिक वारिस भी है। तहत अदालत ने इतंकाल निर्णित करने में कोई त्रुटि नहीं की है इसलिए अपील अपीलाण्टा खारिज फरमाई जावे। वकील रेषपोडेण्ट ने अपने तर्कों के समर्थन में RRT 2018(2) page 1188, RBJ 2017 page 527 न्यायिक दृष्टांत प्रस्तुत किए।

हमने उभयपक्ष की बहस पर मनन किया तथा पत्रावली का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया एवं तहत अदालत की पत्रावली का भी अवलोकन किया गया एवं उभय वकूलाय द्वारा प्रस्तुत न्यायिक दृष्टांतों का अनुशीलन किया।


सर्वप्रथम मियाद के बिन्दु पर विचार किया जाना है। अपीलाण्ट ने अपनी अपील के साथ दफा 5 भारतीय मियाद अधिनियम का प्रार्थना पत्र मय शपथ पत्र पेश किया है जिसमें सर्वप्रथम जानकारी की दिनांक 03.03.2025 को होना कथन किया है तथा अपने कथन के समर्थन में स्वयं का शपथ पत्र भी पेश किया है। पत्रावली पर ऐसा कोई तथ्य/साक्ष्य उपलब्ध नहीं है जिससे यह ज्ञात होता हो कि अपीलाण्ट को चुनौतीपूर्ण आदेश की जानकारी दिनांक 03.03.2025 से पूर्व से ही थी। यद्यपि यह अपील काफी विलम्ब से पेश की गई है, परन्तु अपीलार्थी को अपीलाधीन आदेश की जानकारी प्रारम्भ से ही थी ऐसा कोई तथ्य पत्रावली पर मौजूद नहीं है।

दफा 5 को पक्षकारों को पर्याप्त न्याय दिलाने के लिए उदारतापूर्वक समझा जाना चाहिए। यह प्रावधान इस बात पर विचार करता है कि संबंधित व्यक्ति की स्थिति और देरी का कारण एवं मामले की विशिष्ट परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए। आमतौर पर ऐसे मामलों में विचारण के दौरान पर्याप्त न्याय और तकनीकी विचार एक दूसरे के विरुद्ध देखे

आतारकत कलेक्टर  
(द्वितीय) अलवर (राज०)

जाते हैं। ऐसी स्थिति में पर्याप्त न्याय को प्राथमिकता दी जानी चाहिए क्योंकि दूसरा पक्ष इसका दावा नहीं कर सकता। इस मामले में ऐसा कोई अनुमान नहीं है कि देशी जानबूझकर या किसी लापरवाही, दुर्भावना के कारण हुई है। विलम्ब करने से अपीलान्ट को कोई लाभ नहीं होता, बल्कि वह गम्भीर जोखिम उठाता है। परिसीमा अधिनियम 1963 की धारा 5 के अनुसार किसी भी अपील या आवेदन को परिसीमा अवधि समाप्त होने के बाद भी स्वीकार किया जा सकता है। यदि अपीलकर्ता/आवेदन अदालत को आश्वस्त करता है कि उसके पास परिसीमा अवधि के दौरान अपील/आवेदन दाखिल न कर पाने का पर्याप्त कारण है। इस मामले में अपीलार्थी द्वारा देशी का जो कारण अभिलिखित किया गया है वह संतोषजनक प्रतीत होता है। अतः प्रकरण के गुणावगुण पर निस्तारण हेतु अपील पेश करने में हुई देशी को क्षम्य किया जाकर अपील अपीलार्थी मियाद में शुमार की जाती है।

जहां तक अपीलाधीन आदेश का प्रश्न है यह आदेश नायब तहसीलदार बडौदामेव द्वारा इतंकाल सख्या 1239 सम्मी पत्नि मोतीराम की विरासत इतंकाल पर पारित किया गया है जिसमें पटवारी हल्का द्वारा सम्मी पत्नि मोतीराम की विरासत बहक फत्ता पुत्री मोतीराम व सावित्री पत्नि रोशन कोम चमार सा. बडौदामेव खातेदार के नाम स्वीकार किया गया है। जबकि सावित्री जिसको रोशन की पत्नि बताया गया है अपीलान्टा के कथनानुसार हरियाणा में चली गई है और वहां उसने दूसरा विवाह कर लिया है। अपीलान्टा द्वारा अपील के साथ मोतीराम की विरासत का इतंकाल सख्या 828 भी पेश किया गया है जिसका अवलोकन करने से प्रथम दृष्टया यह जाहिर होता है कि पटवारी हल्का निजामनगर द्वारा यह विवादित इतंकाल सख्या 828 ग्राम खोरपुरी मृतक मोतीराम पुत्र मोहनलाल मेघवाल की विरासत का दर्ज किया गया है जिसमें उल्लेखित सजरे में रोशन पुत्र (फौत) सावित्री का अकंन इतंकाल निर्णित होने के बाद किया गया प्रतीत होता है जो पृथक पैन व पृथक स्याही से किया हुआ है। इसी प्रकार इतंकाल के कालम सख्या 9 में भी ओवर राईटिंग की गई है तथा सावित्री पत्नि रोशन का नाम बीच में अलग पैन से जोड़ा गया है। इस प्रकार यह तथ्य स्पष्ट होता है कि क्या सावित्री रेस्पों उक्त परिवार में मोतीराम व सम्मी की वैद्य वारिस की श्रेणी में आती है। इस तथ्य को तय किये जाने पर सम्मी की विरासतन उत्तराधिकारी हो सकती है। हस्तगत प्रकरण में तहत अदालत द्वारा ना तो मृतक सम्मी के विधिक वारिसान की विस्तृत जाँच की गई और ना ही अपीलान्टा को सुनवाई का कोई अवसर दिया गया। जबकि सर्वमान्य सिद्धान्त है कि विरासत के मामले में विधिक वारिसान की समुचित जाँच उपरान्त ही इतंकाल निर्णित किये जाने चाहिए। हस्तगत प्रकरण में ऐसा नहीं है इसलिए मेरे विनम्र अभिमतानुसार विरासत के मामले में मृतक के विधिक वारिसान की समुचित जाँच उपरान्त ही नियमानुसार जायज वारिसान के नाम इतंकाल स्वीकार किया जाना चाहिए। इस प्रकार उपरोक्त अपीलाधीन आदेश में मृतक सम्मी पत्नी मोतीराम के विधिक वारिसान की जाँच की आवश्यकता है। यद्यपि इतंकाल की कार्यवाही एक फिसकल प्रोसिंडिंग है जिसमें किसी प्रकार के हक व अधिकार तय नहीं होते हैं परन्तु जहां इतंकाल निर्णित करते समय प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्तों की अनदेखी कर पारित किया गया आदेश कानून की नजर में प्रारम्भ से शून्य माना जाता है। अतः उपरोक्त समग्र विवेचन के आधार पर हम यह पाते हैं कि अपीलान्ट द्वारा प्रस्तुत अपील स्वीकार योग्य प्रतीत होती है।

  
अतिरिक्त जिला कलेक्टर  
(द्वितीय) अलवर (राज०)

न्यायालय:- अति० जिला कलक्टर(द्वितीय) अलवर राज०  
उनवान:- श्रीमती पत्ता बनाम सावित्री उर्फ जावत्री  
प्रकरण सं. 11/13/2025 निर्णय दिनांक 22.07.2025

### आदेश

अपील अपीलाण्ट स्वीकार की जाती है तथा नायब तहसीलदार बडौदामेव द्वारा पारित आदेश दिनांक 03.01.2025 बाबत इतकाल सख्या 1239 वाके ग्राम खोरपुरी निरस्त किया जाता है तथा प्रकरण तहसीलदार लक्ष्मणगढ को इस निर्देश के साथ प्रतिप्रेषित किया जाता है कि मृतक सम्मी पत्नी मोतीराम के विधिक वारिसान की समुचित जाँच कर अपीलाण्ट को सुनवाई का समुचित अवसर प्रदान करते हुये नये सिरे से विधिसम्मत इतकाल दर्ज कर निर्णित करें। निर्णय की प्रति तहत अदालत के रिकार्ड के साथ वापिस लौटाई जावे। पत्रावली फ़ैसल शुमार होकर, नम्बर से कम की जाकर बाद तामील तकमील जमा लेख भण्डार हो।

निर्णय आज दिनांक 22.07.2025 को मेरे द्वारा लिखाया जाकर हस्ताक्षरित/मुद्रांकित कर खुले न्यायालय में सुनाया गया।



(योगेश कुमार डागुर)  
अतिरिक्त जिला कलक्टर  
(द्वितीय) अलवर (राज०)